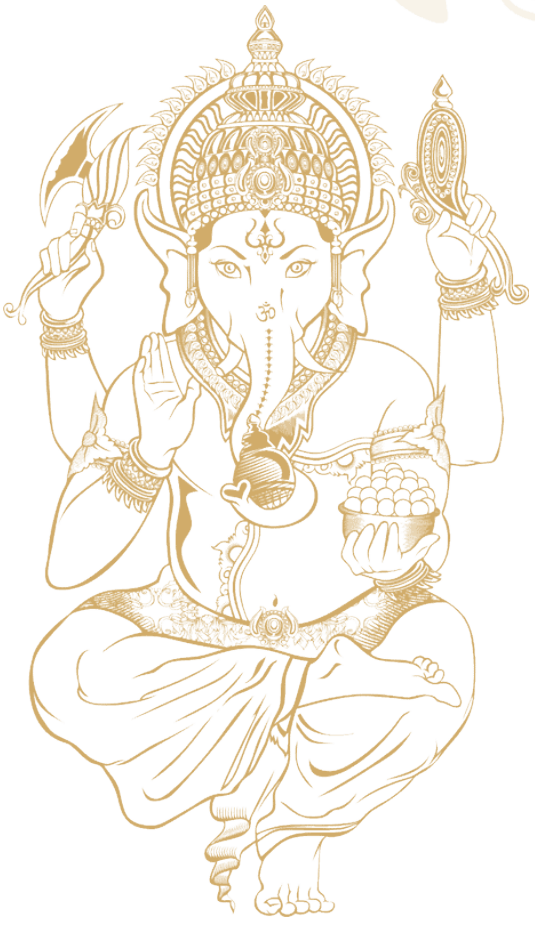

Beby Boy

17 Dec 2025

06:05 PM

Jodhpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121939001**

तिथि 17/12/2025 **समय** 18:05:00 **वार** बुधवार **स्थान** Jodhpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:15
अक्षांश 26:18:00 उत्तर **रेखांश** 73:08:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:37:28 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	23:13:06 घं
वेलान्तर	00:03:52 घं
सूर्योदय	07:18:58 घं
सूर्यास्त	17:48:30 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	13
नक्षत्र	अनुराधा
योग	धृति
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मृग
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	ना-नवीन
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	गुरु
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

शनि 18वर्ष 4मा 13दि
शनि
17/12/2025
01/05/2044

शनि	04/05/2028
बुध	12/01/2031
केतु	21/02/2032
शुक्र	23/04/2035
सूर्य	04/04/2036
चन्द्र	03/11/2037
मंगल	13/12/2038
राहु	19/10/2041
गुरु	01/05/2044

योगिनी

भ्रामरी 3वर्ष 10मा 12दि
भ्रामरी
17/12/2025
30/10/2029

भ्रामरी	10/04/2026
भद्रिका	30/10/2026
उल्का	01/07/2027
सिद्धा	10/04/2028
संकटा	28/02/2029
मंगला	10/04/2029
पिंगला	30/06/2029
धान्या	30/10/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:22:28	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			01:36:04	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि	1.20	ज्ञाति	पितृ	विपत
चंद्र			03:46:31	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	नीच राशि	1.29	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	07:26:49	धनु	मूल	3	केतु	राहु	मित्र राशि	1.26	मातृ	भ्रातृ	विपत
बुध			13:08:26	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	राहु	सम राशि	1.02	भ्रातृ	ज्ञाति	जन्म
गुरु	व		28:53:02	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	सूर्य	शत्रु राशि	1.39	आत्मा	धन	अतिमित्र
शुक्र		अ	26:45:56	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	गुरु	सम राशि	0.80	अमात्य	कलत्र	सम्पत
शनि			01:16:19	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	1.03	कलत्र	आयु	अतिमित्र
राहु	व		18:18:40	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	चंद्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		18:18:40	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

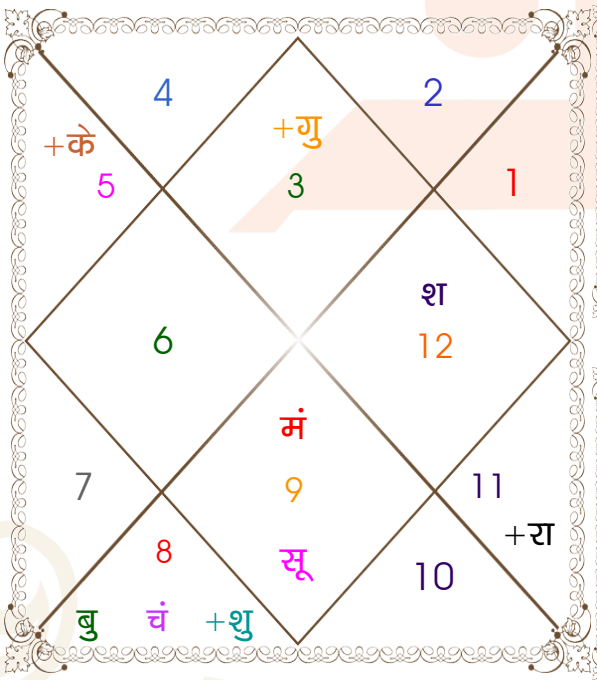

चन्द्र कुंडली

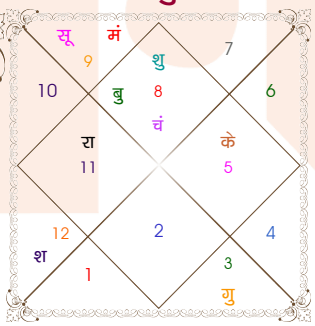

नवमांश कुंडली

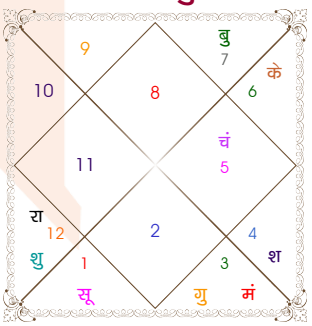

सर्वाष्टकवर्ग

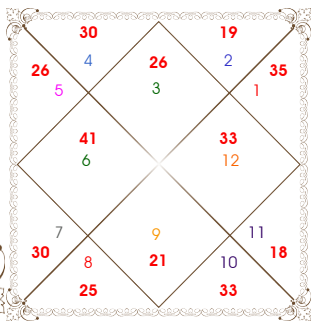

दशमांश कुंडली

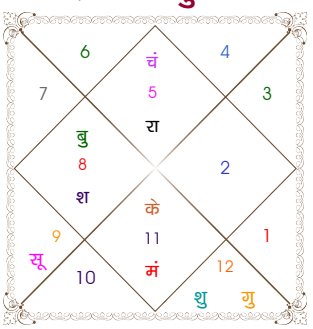

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, वर्ग सर्प, योनि मृग, गण देव तथा नाडी मध्य होगी। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "न" या "ना" से प्रारम्भ होगा। यथा- नरेश, नारायण आदि।

आप एक महान पुरूषार्थी व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्य कलापों को परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। अतः इसी प्रसंग में आप देश विदेश की यात्राएं प्रायः करते रहेंगे। अपने समस्त सम्बन्धियों तथा बन्धुवर्ग की भलाई के लिए आप कार्य करने में सदैव तत्पर रहेंगे तथा हार्दिक तन्मयता से उनके लिए सहयोगशील बने रहेंगे। अन्य जनों के लिए इस प्रकार कार्य करने से आपके अर्न्तमन में अत्यन्त प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होगा तथा आप प्रसन्नचित रहेंगे।

पुरूषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक पुरूषार्थी, प्रवासी, बन्धुओं के कार्य को करने में तत्पर तथा हमेशा प्रसन्नचित रहता है।

आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय होगी जिसे सुनकर अन्य लोग प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा आपसे प्रभावित भी रहेंगे। धन धान्यादि का आपके पास कभी भी अभाव नही ं रहेगा। एवं इससे आप हमेशा सुशोभित रहेंगे तथा जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके पास समस्त भौतिक सुखसंसाधनों की भी प्रवलता रहेगी। तथा इनके उपभोग करने में भी आप हमेशा लिप्त रहेंगे। आप की ख्याति समाज में दूर दूर तक व्याप्त रहेगी तथा सभी लोग आपको सम्माननीय एवं पूजनीय समझकर आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के धनवैभव आदि से आप सुसम्पन्न होकर समर्थवान पुरूष होंगे।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक प्रिय तथा सुन्दर वाणी बोलने वाला, धनवान, सु खसंसाधनों में लिप्त रहने वाला, पूज्य, यशस्वी तथा सामर्थ्यवान व्यक्ति होता है।

आप अतुल धन से सुसम्पन्न रहकर अपना अधिकांश समय घर से बाहर अथवा विदेश में निवास करके व्यतीत करेंगे। यदा कदा आप अपने कार्य में व्यस्तता के कारण या अन्य लौकिक कारणों के भूख से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपकी प्रकृति भ्रमण प्रिय रहेगी तथा अपना अधिकांश समय इधर उधर घूमने या भ्रमणादि में ही व्यतीत करेंगे।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोडनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, विदेश में वास करने वाला, भूख से व्याकुल रहने वाला तथा भ्रमण प्रिय होता है।

आपका शरीर तथा चेहरा हमेशा कान्ति से दैदीप्यमान रहेगा। साथ ही आप एक उत्सव प्रिय व्यक्ति होंगे तथा समय समय पर उत्सव या पार्टियों का आयोजन करते रहेंगे। आपके शत्रु आपसे प्रायः पराजित दौरान आपकी- विरोध करने की उनमें शक्ति नहीं रहेगी। विविध प्रकार की कलाओं के भी आप ज्ञाता होंगे। आप अपने जीवन काल में निपुण रहेंगे तथा धन का आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीड़ित रहेंगे।

वृश्चिक राशि में पैदा होने के कारण आपका वक्षस्थल विस्तृत तथा नेत्र बड़े बड़े होंगे। साथ ही शरीर के वर्ण में अल्प श्यामलता का समावेश हो सकता हैं। आपके हाथ अथवा पैर में मछली का चिन्ह रहेगा। साथ ही हस्त रेखाएं वज्र एवं पक्षी के आकृति के समान रहेगी। गुरूजनों तथा माता पिता से आपके संबंध अल्प ही रहेंगे। अतः इनसे आपको न्यूनतम सहयोग ही प्राप्त हो सकता हैं। शैशव अवस्था में आप कई प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त रहेंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी तथा अपनी बुद्धि एवं परिश्रम के बल पर राज्य में किसी उच्चाधिकार

प्राप्त पद पर आसीन रहेंगे। आप कठोर कार्यों को करने वाले होंगे। अतः पुलिस, सेना तथा सर्जरी आदि विभागों में आप कार्य कर सकेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका मस्तक तथा पेट का आकार भी विस्तृत रहेगा। दूसरे लोगों की वस्तुओं को देखकर आपके मन में लोलुपता भाव उत्पन्न होगा। आपके शरीर में लावण्यता सामान्य रूप से विद्यमान रहेगी। ईश्वर तथा धर्म के प्रति आपके हृदय में अवसरानुकूल श्रद्धा उत्पन्न होगी। आपकी दाढी तथा नाखूनों में भी आघात के चिन्ह रहेंगे। आपके नेत्र भी सुन्दरता को प्राप्त रहेंगे। आप सम्पूर्ण जीवन धनधान्यादि ऐश्वर्य तथा वैभव से सर्वथा युक्त रहेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा निष्क्रिय होकर बैठना आपकी प्रकृति के प्रतिकूल रहेगा। बन्धुवर्ग से आप वांछित सहयोग मिलता रहेगा। कभी आप प्रमादी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे। आप अत्यन्त ही प्रतापी तथा पराक्रमी होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा। सभी लोग आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे तथा आपको पूर्ण आदर प्रदान करेंगे। साथ ही राज्य से आपसी कानूनी या मुकदमे सम्बन्धी समस्याओं में उलझेंगे तथा उनमें धन का व्यय होगा। आप स्वभाव से उग्र होंगे तथा समाज में अन्य जनों से आपके प्रेमपूर्ण संबंध रहेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः कूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनवान पुरूष होंगे तथा परिवारिक वा अन्य जनों का आप पालन करने में तत्पर रहेंगे। स्त्रियों के विषय में आप अत्यन्त ही भाग्यशाली सिद्ध होंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा लाभार्जन होता रहेगा। आप एक गुणवान मनुष्य होंगे आपमें मनुष्यता के गुण पूर्ण रूपेण विद्यमान रहेंगे। साथ ही राजसेवा में भी आप नियुक्त रहेंगे। दूसरों के धन को प्राप्त करने की आपके हृदय में हमेशा इच्छा रहेगी तथा इसके लिए आप सर्वथा प्रयत्नशील रहेंगे। आप उद्यमी पुरूष होंगे तथा किसी न किसी कार्य को करते ही रहेंगे। आप दृढ संकल्पी व्यक्ति होंगे तथा जिस कार्य को प्रारम्भ कर देंगे उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगे। आप एक साहसी तथा शूरवीर व्यक्ति होंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।

दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप मनोरंजन के लिए जुआ आदि खेल भी खेलेंगे परन्तु इसमें आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। आप स्वभाव से ही विवादप्रिय भी होंगे। कभी कभी आप अत्यन्त ही अशान्ति की अनुभूति भी करेंगे।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरुचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आपकी प्रवृति नैसर्गिक रूप से भ्रमणशील रहेगी तथा बचपन से ही घूमने फिरने का विशेष शौक रहेगा। आप में अभिमान का प्रभाव भी रहेगा तथा समय समय पर इस प्रवृति का आप प्रदर्शन करते रहेंगे। अपने संबंधी तथा बन्धुजनों के प्रति आपके मन में स्नेह एवं सहानुभूति की भावना भी विद्यमान रहेगी। साथ ही अपने साहसिक कार्यों के द्वारा आप पूर्ण रूपेण धनार्जन में सफल रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय होगी जो श्रोतागणों को प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरल होगी। आप अपने विचारों को सरलतापूर्वक प्रस्तुत करेंगे तथा अन्य के विचारों को सरलतापूर्वक ग्रहण करने में समर्थ रहेंगे। आप थोड़ी मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। अन्य जनों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी आप महान विद्वानों द्वारा वर्णित उच्च एवं सद्गुणों से सर्वथा युक्त रहेंगे आप नाना प्रकार के धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में उसका उपभोग करेंगे।

आप देखने में सुन्दर होंगे तथा दानशीलता की भावना से भी युक्त रहेंगे एवं समय समय पर समाज में अपनी इस प्रकृति का प्रदर्शन करते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगे। आप अपने समाज में एक उच्चकोटि के विद्वान होंगे एवं समाज में पूर्ण सम्मानित तथा पूज्य समझे जाएंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में

भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय रहेगी तथा अपने समस्त कार्यों को अपने ही तरीके से करना पसन्द करेंगे। बाहरी हस्तक्षेप आपको अच्छा नहीं लगेगा। आपकी प्रवृति शान्त रहेगी तथा चंचलता का उसमें अभाव रहेगा। आप सद्कार्य के द्वारा आप अपनी आजीविका का अर्जन करेंगे। सत्य एवं धर्म में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इनका पालन करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आपका समीपस्थ संबंधियों तथा बन्धुवर्ग के प्रति हमेशा स्नेहशील व्यवहार रहेगा तथा उनको आप हमेशा कुछ न कुछ सहयोग अवश्य प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप एक पराक्रमी एवं शूरवीर पुरूष होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं

सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, व्यतिपात योग, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, व्यतिपात योग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा आदि अन्य कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए तथा नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र चढाने चाहिए साथ सोमवार या वृहस्पतिवार के उपवास करने चाहिए। इसके साथ ही सोना, मूंगा लाल वस्त्र, चन्दन, गेंहू इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।